ICSSR Sponsored
ISSN: 2319-9997
Journal of Nehru Gram Bharati University, 2025; Vol. 14 (I):293-297

मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों की कसौटी पर मानस कि अनार्य नारी पात्र मंदोदरी

प्रिया पाण्डेय एवं सव्यसाची

हिन्दी विभाग

नेहरु ग्राम भारती (मानित विश्वविघालय), प्रयागराज

Email: manojtwr.ce@gmail.com

Received: 12.03 2025 Revised:22.05.2025 Accepted: 29.05.2025

मंदोदरी लोक प्रसिद्ध शिल्पकार मय दावन की पुत्री एवं हेमा नामक अप्सरा की कोख से उत्पन्न अनुपम सुंदरी थी। मय दानव ने रावण से मंदोदरी को पत्नी के रूप में स्वीकार करने का अनुरोध किया, जिसके फलस्वरूप मंदोदरी राक्षसराज रावण की राजमहिषी एवं लंका की सम्राज्ञी बनी।

''इयं ममात्मजा राजन हे या प्सरसा घृता,
प्रहसन प्राह दैत्येन्द्रों राक्षसेन्द्र बिदं बच (वा0रा0 7/12/18)
कन्या मंदोदरी नाम पत्यर्थ प्रति गृहयताम्।
वाढमित्येव हा राम दशग्रीवोभ्य भाषत्। (वा0रा0 7/12/19)
प्रज्वाल्य तत्र चौवाग्निमकरोत पाणि संग्रहम् (वा0रा07/12/182)

यद्यपि मंदोदरी सर्व गुण सम्पन्न औरत थी फिर भी अपनी असंयमित काम वासना के कारण रावण अपने को मंदोदरी के सौंदर्य सीमा में संयत न रख सका और मंदोदरी के अतिरिक्त अन्य जाति एवं वर्ग की कन्याओं का अपहरण कर उनके साथ रावण ने विवाह किया (मानस/188 ख)। मंदोदरी रावण के अनियंत्रित अहं के नियन्त्रण का असफल प्रयास करती रही। रावण की उद्दाम वृत्ति के कारण वह सतत उद्विग्न रहती थी। अपने सामने ही अशोक वाटिका में शोकाकुल वंदिनी सीता को देखा तब उसकी उद्विग्नता अति असीम हो गई। रावण मंदोदरी के सामने ही सीता के दृष्टिदान से अपनी यौन संतुष्टि चाहता है। मनोविज्ञान की भाषा में इसे दर्शन रति कहा गया है।

''जब एक बार के दृष्टि दान से वह रावण मंदोदरी के साथ सभी रानियों को उस नवागत नारी की सेविका बना देने की उतावली दिखा रहा है, अगर कहीं वह अद्भुत अङ्गना अनुकूल हो गई, तब इन रानियों की दशा क्या होगी? सोच-सोचकर मंदोदरी मन ही मन कॉप उठी और उसका मान मंदिर नींव से डोल उठा।'' रावण के इस व्यवहार से मंदोदरी में कुण्ठा का जन्म होता है, जिससे उसकी इद शक्ति (प्रत्यावर्ती क्रिया) प्रकट होती है और रावण को वह अपने ढंग से समझाने लगती है।

फ्रायड ने इड में छिपी शक्ति को लिविडो कहा है, जिससे व्यक्ति अपनी बहुत सी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। और यही जीवन शक्ति लिविडो का आधार आनन्द का सिद्धान्त है। इसलिए आन्तरिक संतोष और आनन्द पाने में ही यह शक्ति लगी रहती है। इस नैसर्गिक इच्छाओं की पूर्ति में कोई बाधा आये तो यह उसे हटाने या प्रभावहीन बनाने का प्रयास करती है। अतः मंदोदरी अपनी इड शक्ति एवं नैसर्गिक इच्छा की पूर्ति हेतु रावण को समझाती है तथा वह उसे प्रेरित करती है कि वह सीता को राम को लौटा दें। सीता को वह अपनी इच्छा पूर्ति में बाधक समझती है, यद्यपि इड संतुष्टि के लिए मंदोदरी विध्वसंनात्मक रूप अपना सकती है और सीता के वध में सहयोग दे सकती थी, परन्तु सीतावध से ही उसकी इड की संतुष्टि नहीं हो सकती थी क्योंकि अन्य रानियाँ भी थी अतः रावण की यौन उर्जा को मार्गान्तरित करना चाहती थी क्योंकि यौन एक ऐसी बहुत ही बलशाली ईहा है जिसे पूर्णतः दबाया नहीं जा सकता।

विभिन्न विद्वानों के मतों के अध्ययन से विदित होता है कि चिंता भय से उत्पन्न होती है मैक्डूगल के अनुसार यह मनः स्नायु विकृत उस अवस्था में उत्पन्न होती है जब व्यक्ति एक निश्चित उद्देश्य के परिणाम प्राप्त करने के लिये उत्सुक रहता है। जब कि फिसर का मत है कि ''चिंता मनः स्नायु विक्रम उन आन्तरिक व्यक्तिगत अप्रवेश योग्य कठिनाईयों की प्रक्रिया है। जिसका ज्ञान व्यक्ति को नहीं होता है।'' इस संदर्भ में रोजर व ग्रेगरी का विचार है कि इस रोग से पीड़ित व्यक्ति बैचेनी, आकांक्षाए तथा स्वतंत्र दिशाहीन चिंता आदि के प्रमुख लक्षणों से चिंतित रहता है। परन्तु केमरान का कथन है कि व्यक्ति व्यापक संवेगात्मक तनाव व स्वतंत्र चिंता से ग्रस्त रहता है।

जनक की सभा में रावण का पराभव, शूर्पणखा की दुर्दशा, लक्ष्मण द्वारा खींची गई सामान्य रेखा का उलंघन न करना, पुत्र (अक्षय) का वध, बाग विध्वंस, लंका दहन, सेतु रचना, सुवेल शैल पर सदन राम का विश्राम आदि मंदोदरी के लिए चिंता के कारण तो थे ही परन्तु पातिव्रत के सौभाग्य चिन्ह कर्ण फूल तांटक पर प्रहार होने से उसके समक्ष अगम्य अमंगल उपस्थित हो गया, जिससे मदोदरी की चिंता अत्यधिक बढ़ जाती है और बार-बार रावण को विभिन्न प्रकार से समझाती है परन्तु रावण के ऊपर किसी भी प्रकार का प्रभाव न पड़ते देख वह राम के ऐश्वर्य और विश्व रूप विराटत्व का ऐसा अनुपम चित्र प्रस्तुत किया जिसके सामने बड़े-बड़े दार्शनिक भी दंग रह जाएगें।

आर्य का अपौष्ठाय ग्रंथ वेद की ऋचाओं (पुरूष सूक्त) में वर्णित विराट पुरुष का स्वरूप भी मंदोदरी के इस दार्शनिक उदगार से पीछे ही रह जाता है। (मानस 6/14-15 क)। मंदोदरी इसके माध्यम से रावण में विस्थापन व प्रक्षेपण से असंगत या अतार्किक भय की सृष्टि करना चाहती है ताकि रावण अपने द्वारा निर्मित परिस्थितियों से डर भागे और उसकी जो चिंता है वह कम हो जाय। इस संदर्भ में केमरान के अनुसार ''दुर्भीति प्रतिक्रिया एक क्षेत्र ऐसा प्रयास है जो विस्थापन प्रक्षेपण व अनुवाद प्रक्रियाओं के माध्यम से आंतरिक रूप से उत्पन्न तनाव व चिंता को कम

करता है। जीवन की पुरानी घटित घटनाओं की याद से मंदोदरी तीव्र बेचौनी का अनुभव करने लगती है।

जिसमें उसमें चिन्ता स्नायु विकृत आ जाती है, जिसके कारण मंदोदरी की चेतना अतार्किक एवं व्यर्थ के विचारों से पीड़ित है क्योकि वह जानती है कि उसके तर्क और विचार रावण के लिए महत्वहीन है। मनोग्रस्तता के कारण ही वह अपने को नियंत्रित नहीं कर पाती और रावण के सामने आंचल फैलाकर अपने अखण्ड सौभाग्य और प्रेम की भीख मांगती है। फिसर महोदय के अनुसार ''मनोग्रस्तता एक ऐसे विशिष्ट स्वरूप की मानसिक या आन्तरिक प्रक्रिया है, जिसे व्यक्ति अतार्किक समझता है लेकिन उसका कुछ नियंत्रण नहीं होता है। इस संदर्भ में पेज का कथन है कि ''मनोग्रस्तता वह विचार या आवेग है जो रोगी की इच्छा के प्रतिकूल अपने आप ही उसके मन में बार-बार आता है। जबकि कुछ अन्य मनोवैज्ञानिकों का मत है किं मनः स्नायु विकृत एक रोग न होकर मानसिक व स्नायी संबंधी सरल विकृत है।

भीति के पैदा करने में अभिसाधन भारी हाथ होता है। अभिसंधान के सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति किसी अप्रत्यक्ष या उदासीन उद्दीपन से भी अपना सम्बन्ध जोड़ता है और भीत व्यक्ति उदासीन वस्तु से भी डरने लगता है। व्यक्ति अपनी विगत दुखद स्मृतियों को नहीं भूल पाता और स्मृति भयभीत लगता है। इस प्रकार की भीति लम्बी आयु तक अथवा जीवन भर बनी रह सकती है। भीति से पीड़ित व्यक्ति स्नायु विकृत वाला व्यक्ति अपने जीवन की किसी पिछली घटना या भग्नाशा की और लौट पड़ता है। इससे उसकी पलायन की प्रवृत्ति का बोध होता है।

मंदोदरी का भाई मायावी (मय-सुत) जो महापराक्रमी बलशाली था और युद्ध के लिए सदैव तत्पर रहता था उसने एक बार गई रात्रि में किष्किन्धा में आकर परम पराक्रमी बाली को युद्ध के लिये ललकारा-

मय सुत मायावी तेहि नाऊँ, आवा सो प्रभु हमरे गाऊँ। (मानस 4/5/2)

अर्द्ध रात्रिपुर द्वार पुकारा, बाली रिपु बल सह न पारा। (मानस 4/5/3)

बालि ने उस मायावी का पीछा किया और एक गुफा उसे मार डाला (मानस 4/5/8)। बालि मंदोदरी के भाई का बध और जगत विजेता रावण को अपनी कॉख में रखने वाला था (मानस 6/24), उस बालि को मारने वाले राम हैं इसका उल्लेख मंदोदरी ने रावण को समझाते समय किया है (मानस 6/36) बालि वध के पश्चात राम के द्वारा तारा को दिया गया उपदेश भी मंदोदरी ने सुना होगा आदि। इन्हीं कारणों से मंदोदरी के हृदय में राम के प्रति आस्था जागृत हुई और वह राम के यश बल, बुद्धि आदि गुणों का बार-बार बखान करने लगी। हनुमान के द्वारा आग लगाने से स्वर्णमयी लंका की उतुग अट्टालिकाओं को अग्नि की ऊंची लपटों में घिरा देख मंदोदरी के मन में आग के प्रति भय अग्नि भीति बैठ गई और रात में ही भाई (मायावी) के वध के कारण ही उसमें नक्त अंधकार भीति की भी सृष्टि हो गयी, जिससे वह बार-बार सीता को ''शीतनिसा'' (मानस

5/35/10) और ''काल राति मानस 5/39/ख/8) मानकर रावण से उन्हें परित्याग करने का आग्रह करती है।

कुछ व्यक्ति सामाजिक प्रतिष्ठा, सामाजिक स्तर और लोकप्रियता में इतने बन्ध जाते हैं कि वे दूसरे के लिए एक आदर्श बन जाते हैं। दूसरे व्यक्ति इस प्रतिष्ठित व्यक्ति के समान बनना चाहते हैं या अपने प्रिय को उसके अनुरूप देखना चाहते हैं इस रक्षा युक्ति को जिसमें भग्नाशित व्यक्ति या अन्तर्द्वन्द में फंसा हुआ व्यक्ति, प्रतिष्ठित व्यक्ति जैसा बनना चाहता है तो उसे तादात्म्य कहा जाता है। अन्य विद्वानो ने भी अपनी सहमति करते हुए कहा है कि ''जब कोई दूसरे व्यक्ति के आचरण से प्रभावित प्रतिष्ठा या प्रसिद्धि के व्यक्ति की जीवन शैली को अपनाने लगता है तो उसे तादात्म्य कहा जाएगा। इस रक्षा युक्ति के सहारे वह व्यक्ति अपनी अनुपयुक्तता की क्षतिपूर्ति करके अपने व्यक्तित्व से सम्बन्धित दोषों को दूर करना चाहता है। वह उस एक प्रतिष्ठित व्यक्ति को आदर्श मानकर उसके अनुरूप अपने व्यवहार को बदलना चाहता है।

पति के प्रति अतिशय प्रेम करने वाली मंदोदरी अपने पति रावण की बार-बार उपेक्षा और निन्दा करती है जो उचित नहीं है। प्रतिव्रताओं का पति ही परमेश्वर होता है परन्तु मंदोदरी दूसरे के पति में ईश्वरत्व का प्रतिपादन करती है। पति पारायण पत्निया जहाँ अपने पति के बल, वीर्य, यश आदि का वर्णन कर उन्हे उत्साहित करती हैं वही मंदोदरी अपने पति के समक्ष उसके शुत्र राम की प्रशंसा कर उसके अन्तःशक्ति को क्षीण करती है। रावण की मृत्यु पर तिलांजल देना तथा घर लौटते समय पति के स्थान पर हृदय से राम का चिन्तन करना भी रक्ष संस्कृति के अनुकूल नहीं है। मंदोदरी का उक्त कार्य मनः स्नायु विकृति से ग्रस्त दिखाई पड़ता है। इस संदर्भ में हार्नी महोदय का विचार है कि बहुत सी प्रतिक्रियायें जो एक संस्कृति में मनः स्नायु विकृति से सम्बन्धित दिखाई पड़ती है तो दूसरी संस्कृति में वे पूर्णतः सामान्य क्रिया होती है। अतः मनः स्नायु विकृत व्यक्ति वह होता है जो इस प्रकार का व्यवहार करता हो कि उस संस्कृति में अन्य व्यक्ति न करते हों।

शारीरिक संरचना के आधार पर व्यक्ति के व्यवहार की व्याख्या विलियम जेम्स (1) कोमल हृदय और (2) कठोर हृदय दो प्रकार से किया है। कोमल हृदय वे व्यक्ति हैं जो अमूर्त सिद्धान्तों को बहुत मानते हैं तथा इसी सिद्धान्त के ही आधार पर इनका व्यवहार निर्देशित होता है।

ये व्यक्ति बुद्धिजीवी, आदर्शवादी, आशावादी, आस्तिक व पूर्वाग्राही होते हैं। इस प्रकार जैम्ब महोदय की व्यवहार कसौटी पर यदि मंदोदरी का व्यक्तित्व कसा जाय तो वह खरा उतरता है वह विवेक, संतोषी, कुशल नीति थी परन्तु प्रारम्भ से ही रावण की असंयमित कामैषणा वृत्ति उसके मन में अन्तरद्वन्द और निराशा को उत्पन्न कर देती है जिसके कारण बाद प्रबल प्रतापी शत्रु राम और उनके सेवकों का आतंक उसके अन्तर्मन में मनः स्नायु विकृति का स्थान में लेती है जिससे वह निरन्तर पीड़ित रहती थी और इसी विकृति के कारण उसका कार्य रक्ष संस्कृति के प्रतिकूल था परन्तु तुलसी भक्त थे अतः उन्होनें उसकी इस विकृति को भी राममय बनाकर उसे दोष मुक्त कर दिया है।

संदर्भ:

हिन्दी महाकाव्य में नारी चित्रण: डॉ0 श्याम सुंदर व्यास, पृ0 118
असमान्य मनोविज्ञान: डॉ0 एस0पी0 चौबे, पृ0 604
मानस की महिलायें: डॉ0 रामानंद शर्मा, पृ0 405
असामान्य मनोविज्ञान: डॉ0 एस0पी0 चौबे, पृ0 190
असामान्य मनोविज्ञान: डॉ0 लाभसिंह, डॉ0 गोविन्द तिवारी, पृ0 589
असामान्य मनोविज्ञान: डॉ0 लाभसिंह, डॉ0 गोविन्द तिवारी, पृ0 268
असामान्य मनोविज्ञान: डॉ0 लाभसिंह, डॉ0 गोविन्द तिवारी, पृ0 268.
असामान्य मनोविज्ञान: डॉ0 लाभसिंह, डॉ0 गोविन्द तिवारी, पृ0 268.
असमान्य मनोविज्ञान : डॉ0 लाभसिंह, डॉ0 गोविन्द तिवारी, पृ0 275
असामान्य मनोविज्ञान : डॉ0 लाभसिंह, डॉ0 गोविन्द तिवारी, पृ0 248
असामान्य मनोविज्ञान: डॉ0 एस0पी0 चौबे, पृ0 411
असामान्य मनोविज्ञान: डॉ0 एस0पी0 चौबे, पृ0 113-114
असामान्य मनोविज्ञान: डॉ0 लाभसिंह, डॉ0 गोविन्द तिवारी, पृ0 247
असामान्य मनोविज्ञान: डॉ0 लाभसिंह, डॉ0 गोविन्द तिवारी, पृ0 124-123

Disclaimer/Publisher's Note:
The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.